

आज की मुरली का सार --

बाबा ने कहा, तुम बच्चों की परिपक्व अवस्था की निशानी हैं, **आत्मा संपूर्ण कर्मेन्द्रियाजित और अचल-अडोल अवस्था**.

हम, आत्माये कैसे संपूर्ण कर्मेन्द्रियाजित और अचल-अडोल अवस्था को पा सकते हैं?

बाबा ने कहा हमारा योग ऐसा पावरफुल हो जो बाप को बच्चों की कशिश हो.

जब हम योग में बैठते हैं तो सबसे पहले, हमें अन्तरमुखि बन, स्वयं को आत्मिक स्थिति में स्थित करना हैं. स्वयं को आत्मिक स्थिति में स्थित करने के लिए, हमारे ज्ञान-चक्षु को युज कर स्वयं को आत्मा निश्चय कर, हमारी दो आंखों के बिचमें, ब्रकुटि में चमकता हवा ज्योतिर्मय सितारा (स्टार) हूँ, ऐसे स्वयं को आत्मा के रूप में दिव्य-चक्षु से देखना हैं.

अब हमें अपनी आत्मा को स्वमान देना हैं.

में आत्मा, शांति सागर का बच्चा, शांत स्वरूप हूँ.

में आत्मा, पवित्रता के सागर का बच्चा, पवित्र शक्ति हूँ.

शांति और पवित्रता मुझ आत्मा का स्वधर्म हैं.

स्वमान से भरपूर आत्मा, जब अपने परमप्रिय-परमपिता-परमात्मा-परमप्यारे शिवबाबा को परमधाम में याद करती हैं, तो प्यारे बाबा को हमारी याद जरूर पहोचती हैं. हमारे प्यारे बाबा को हम किसी भी सम्बन्ध से याद कर सकते हैं. यहाँ में आशिक आत्मा, अपने प्राण-प्यारे माशूक को कैसे याद करती हूँ.

में आशिक आत्मा, माशूक परमात्मा के लव में लवलीन हूँ.

ये रुहानी आत्मा-परमात्मा का मिलन, आत्मा को हर कष्टों से मुक्त कर देता हैं.

में शिव कि पार्वती हूँ. जिसको मैंने जन्मो-जन्म ढूँढा, वो मेरा माशूक अब मुझे मिल गया हैं. कितना सुंदर हैं. कितना मीठा हैं. कितना प्यारा हैं. कितना प्योर (पवित्र) हैं.

में तो पत्थर थी, तुमने (रुहानी पारसनाथ) आ कर मुझे टंच (touch) किया ओर में पारस बन गयी.

ओ मेरे रुहानी माशूक, मैं कितना न तेरा शुक्रिया करूँ, तुमने मुझे अपना लिया.

अब तो मेरा यह हाल हैं, तेरे बिना एक क्षण भी निकाल नी मुश्किल हो गयी हैं.

ऐसे बाबा को इतना प्यार से, दिल की सच्चाई-सफाई से याद करो की प्राण-प्यारे बाबा हमारे प्यार में खिंचा चला आये. इसलिए बाबा कहते हैं स्वयं भगवान को भी हम आत्माओं से कशिश होती हैं. अगर हमारा योग पावरफुल हैं तो कर्मेन्द्रिया स्वतः ही शांत हो जाती हैं, अवस्था अचल-अडोल बन जाती हैं.

ॐ शांति.